International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2022; 4(1): 41-45
Received: 05-01-2022
Accepted: 09-03-2022

अवधेश कुमार यादव
शोधार्थी अर्थशास्त्र विषय, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. आर. बी. एस. चौहान
प्राध्यापक अर्थशास्त्र, संजय गाँधी स्मृति शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अवधेश कुमार यादव
शोधार्थी अर्थशास्त्र विषय, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

पशुधन किसानों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन (सीधी जिले के मझौली विकासखण्ड के करमाई गांव के विशेष संदर्भ में)

अवधेश कुमार यादव, डॉ. आर. बी. एस. चौहान

सार
पशुपालन क्षेत्र के नियोजित विकास से देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होती है। पशुधन विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन से पशुपालक किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन पशुधन किसानों के सामाजिक–आर्थिक विशेषताओं के परीक्षण के लिए वर्ष 2022 में सीधी जिले के मझौली विकासखण्ड के करमाई नामक गांव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में करमाई गांव के 65 उत्तरदाताओं को प्रतिदर्श आकार हेतु चुना गया है। इस प्रकार अध्ययन को विकासखण्ड मझौली के करमाई गांव में पशुपालकों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए अभिकल्पित किया गया है। उत्तरदाताओं से संरचित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राथमिक आंकड़े एकत्र किये हैं। अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि अधिकांश पशुधन किसानों के पास पशुधन से निम्न एवं मध्य स्तर की आय प्राप्त होती है। अधिकांश किसान जो पशुधन गतिविधियों से जुड़े हैं वे खेतिहर मजदूर, छोटे कृषक एवं सीमांत कृषकों की श्रेणियों में आते हैं। इसलिए सरकार, पशु चिकित्सा सेवाओं के साथ–साथ कृषि अनुसंधान केन्द्रों तथा अन्य विस्तार एजेंसियों द्वारा पशुधन पालन व खेती के तरीकों के बारे में जानकारी प्रदान करने के प्रयास किए जाने चाहिए ताकि वे अपने जीवन में परिवर्तन ला सके। पशुधन किसानों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए पशुधन विकास नीतियों का उचित क्रियान्वयन आवश्यक है। कम कृषि लाभप्रदता के कारण, युवा वर्ग कृषि में रुचि नहीं रखते हैं। ऐसी स्थिति में वे अन्य संबंधित सेवाओं की ओर रुख करते हैं। ऋण, बाजार, विस्तार सेवा तक पहुँच प्रदान करके लोगों को पशुधन आधारित खेती को बनाए रखने के लिए कृषि लाभप्रदता को बढ़ाया जाना चाहिए।

कुटशब्दः पशुधन किसान, सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन, विश्लेषण, पशु चिकित्सा विस्तार एवं करमाई गांव।

प्रस्तावना

देश के ग्रामीण क्षेत्रों में पारिवारिक आय के पूरक और लाभकारी रोजगर सृजन करने में पशुधन क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भोजन में पशुधन द्वारा पशु प्रोटीन से युक्त पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। वर्तमान समय में भारत में 485 अरब पशुधन एवं 489 अरब कुक्कुट हैं। मवेशियों की संख्या में भारत दूसरे स्थान पर है इसमें भैसों की संख्या सबसे अधिक है। वहीं भेड़ों की संख्या तीसरे स्थान पर, बकरी की संख्या में देश का दूसरा सबसे बड़ा स्थान है। इसी तरह देश में कुक्कुट का स्थान पाँचवें क्रम में है। भारत में पशुधन का एक विशाल संसाधन है। यह देश के सकल घरेलू उत्पाद में 4.11 प्रतिशत का योगदान देता है। वहीं सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 25.69 है। देश के लगभग 20.5 अरब लोग अपनी आजीविका के लिए पशुधन पर निर्भर है। लघु कृषक परिवारों की आय में पशुधन का 16 प्रतिशत योगदान है। जबकि सभी ग्रामीण परिवारों के लिए यह औसत 14 प्रतिशत है। पशुधन दो–तिहाई ग्रामीण समुदाय को आजीविका प्रदान करता है। यह क्षेत्र भारत में लगभग 8.8 प्रतिशत आबादी को रोजगार भी प्रदान करता है।

पशुधन वह क्षेत्र है जहाँ गरीब व्यक्ति किसी और क्षेत्र के विकास से लाभ प्राप्त करने के बजाय वह सीधे देश के विकास में योगदान देता है। पशुधन क्षेत्र में समग्र विकास दर स्थिर है। यह विकास दर प्रतिवर्ष लगभग 4 से 5 प्रतिशत है। इस विकास दर से यह स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में सरकार द्वारा पर्याप्त निवेश नहीं किया गया है। पशुधन के एक बड़े हिस्से का स्वामित्व भूमिहीन मजदूरों एवं सीमांत कृषकों के पास है। इस क्षेत्र में प्रगति के परिणामस्वरूप देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का संतुलित विकास विशेष रूप से कमजोर वर्गो के लिए होता है। गरीब लोगों की आजीविका व गरीबी को दूर करने में पशुधन का विशेष योगदान है। ग्रामीण महिलाएँ पशुधन में विशेष भूमिका निभाती है। मवेशियों के आहार, प्रजनन देखभाल, प्रबंधन एवं स्वास्थ्य देखभाल जैसे अधिकांश कार्यो में सीधे तौर पर महिलाएँ शामिल हैं। वैश्वीकृत एवं उन्नतशील अर्थव्यवस्था में जहाँ सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सब्सिडी वापस ली जा रही है। इसके बावजूद भी देश में अधिकांश राज्यों में दूध उत्पादक समितियों का समग्र विकास एवं प्रदर्शन संतोषजनक नहीं है। हॉलांकि विश्व में पशुधन सम्पदा के मामले में भारत सबसे अमीर देशों में शामिल है।

लेकिन यहाँ के पशुधन क्षेत्र में उत्पादकता का स्तर पशु प्रजातियों की निम्नता के कारण कम है। संभवतः पशुपालकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में अन्तर इसका एक प्रमुख कारण हो सकता है। फिर भी भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध आलेख पशुधन किसानों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति के लिए उपयोगी व सार्थक है।

शोध उद्देष्य : प्रस्तुत शोध आलेख में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. प्रस्तुत शोध आलेख में पशुपालक किसानों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विश्लेषण।
2. पशुधन से प्राप्त दुग्ध, खपत एवं विक्रय के बारे में जानकारी का विश्लेषण।
3. पशुधन पालक किसानों द्वारा पशुधन पालन में आने वाली बाधाओं का विश्लेषण।

सामग्री एवं विधितंत्र

प्रस्तुत अध्ययन मध्य प्रदेश राज्य के सीधी जिले के मझौली विकासखण्ड के पशुपालकों पर किया गया है। अध्ययन कार्य अन्वेशणात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है। इसके लिए मझौली विकासखण्ड के करमाई गांव का चयन यादृच्छिक रूप से चुना गया है। अध्ययन में करमाई गांव के 65 पशुपालक कृषकों का चयन सर्वेक्षण द्वारा किया गया है। उत्तरदाता पशुपालकों से उनके सामाजिक–आर्थिक स्थिति से संबंधित तथ्यों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है। साथ ही अध्ययन में सांख्यकीय विधियों का उपयोग कर आंकड़ों का विश्लेषित किया है। अध्ययन प्रयुक्त में द्वितीय सूचना स्रोतों का संकलन प्रकाशित एवं अप्रकाशित शासकीय प्रतिवेदनों, शोध आलेखों तथा इन्टरनेट द्वारा किया गया है।

परिणाम एवं परिचर्चा

प्रस्तुत आलेख में अध्ययन क्षेत्र के पशुधन किसानों की व्यक्तिगत, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, कृषि भूमि जोत आकार एवं फसल प्रतिरूप, पशुधन पालन एवं आहार प्रतिरूप की परिचर्चा की गई है। साथ इस अध्ययन में दुग्ध उत्पादन, खपत एवं विक्रय, पशुपालन में आने वाले बाधाएँ एवं रूचिकर पशुधन गतिविधियों के विस्तार इत्यादि से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण प्राप्त आंकड़ों के आधार पर किया गया है। अध्ययन में प्रयुक्त तथ्यों की परिचर्चा निम्नानुसार है–

1. पशुधन किसानों की व्यक्तिगत, सामाजिक–आर्थिक स्थिति

अध्ययन में प्रतिदर्शित पशुधन किसानों की व्यक्तिगत एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति से संबंधित आंकड़ों को तालिका क्रमांक 1 में दर्शाया गया है। तालिका द्वारा प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि प्रतिदर्शित आधे से अधिक (64.62 प्रतिशत) पशुधन पालक किसान एकल परिवार में रहते हैं। वहीं 35.38 प्रतिशत पशुपालक संयुक्त परिवार से संबंधित हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि कृषक वर्ग संयुक्त परिवार व्यवस्था के लाभों के बारे में नहीं जानते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में संयुक्त परिवार व्यवस्था समय के साथ अब धीरे–धीरे कम होती जा रही है। आय–सृजन गतिविधियों के लिए संयुक्त परिवार व्यवस्था अधिक उपयुक्त होती है। संयुक्त परिवार से घर के प्रत्येक सदस्य की सामाजिक–आर्थिक स्थिति बेहतर रहती है।

इसी तरह 47.69 प्रतिशत पशुधन किसान मध्यम आकार के परिवार से है। वहीं 36.93 प्रतिशत कृषक छोटे आकार के परिवार से संबंधित हैं। वहीं 15.38 प्रतिशत पशुपालक कृषक बड़े आकार के परिवार से तालुक रखते हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि बड़े परिवार के पशुपालक कृषकों में परिवार नियोजन के लाभों में बारे में जानकारी नहीं है। मूलतः इस तरह के प्रवृत्ति वाले अध्ययन कविता एवं रेड्डी (2007) द्वारा भी परीक्षण किये गये हैं। अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि उत्तरदाता कृषकों में तीन–चौथाई से अधिक अर्थात 78.47 प्रतिशत लोग पुरूष हैं, जो परिवार के कार्यो में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। वहीं 13.84 प्रतिशत महिलाएँ हैं, जिनका निर्णय परिवार के लिए अहम रहता है। जबकि पारिवारिक निर्णय के प्रति 7.69 प्रतिशत महिला एवं पुरूष दोनों की सहभागिता समान है। इस तरह के अध्ययन निष्कर्ष सत्यनारायण, जगदीश्वरी एवं यतिराज (2010) द्वारा परीक्षण किया गया है। पशुधन किसानों को चाहिए कि वे घर के कार्यो को करने में सभी के साथ चर्चा करके निर्णय लेने से जहाँ एक ओर पारिवारिक बंधन मजबूत होते है। वहीं दूसरी ओर एक साथ समूहिक निर्णय लेने से कार्य में सहभागिता व सहायता भी मिलती है।

तालिका 1: पशुधन किसानों की व्यक्तिगत, सामाजिक–आर्थिक स्थिति

क्र. सं.	व्यक्तिगत, सामाजिक–आर्थिक विशेषताएँ	पशुधन किसान	
		संख्या	प्रतिशत
1.	**परिवार का आकार**		
	एकल परिवार	42	64.62
	संयुक्त परिवार	23	35.38
2.	**परिवार का आकार**		
	लघु परिवार	24	36.93
	मध्यम परिवार	31	47.69
	बड़ा परिवार	10	15.38
3.	**परिवार में निर्णय लेने की स्थिति**		
	पुरूष	51	78.47
	महिला	09	13.84
	पुरूष एवं महिला दोनों	05	07.69
4.	**सामाजिक सहभागिता**		
	ग्राम पंचायत	18	27.69
	सहकारी समिति	26	40.00
	स्वयं सहायता समूह	21	32.31
5.	**आय का स्तर**		
	निम्न श्रेणी की आय	62	95.39
	मध्यम श्रेणी की आय	2	03.07
	उच्च श्रेणी की आय	1	01.54

स्रोतः प्राथमिक आंकड़े (जनवरी 2022)

तालिका क्रमांक 1 द्वारा प्रदत्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश कृषक (40 प्रतिशत) सहकारी समितियों के सदस्य है। वहीं 27.69 प्रतिशत कृषक ग्राम पंचायत के सदस्य हैं। जबकि 32.31 प्रतिशत पशुपालक कृषक स्वयं सहायता समूह के सदस्य है। इस तरह ज्ञात होता है कि कृषकों के मवेशी उनके प्रमुख पशुधन संसाधन में से एक है। जिसके कारण ही क्षेत्र के अधिकांश कृषक सहकारी समिति के सदस्य है। उक्त अध्ययनगत आंकड़ों में यह भी पाया गया कि सबसे अधिक अर्थात 95.39 प्रतिशत पशुपालक कृषकों की पारिवारिक आय निम्न श्रेणी की है। जबकि मध्यम श्रेणी व उच्च श्रेणी की आय वाले कृषकों के पारिवारिक आय का प्रतिशत क्रमश 3.07 एवं 1.54 प्रतिशत है। इसीलिए पशुपालकों के लिए पशुधन व्यवसायों को मजबूत करने, वैज्ञानिक तरीके से पशु पालन करने से, तथा जागरूकता बढ़ाने से जोखिम लेने की क्षमता में सुधार होता है। ऐसे प्रयासो से पशुधन गतिविधियों के साथ–साथ कृषकों की आय के स्तर को बढ़ाया जा सकता है। इस तरह के अध्ययन जगदीश्वरी (2009) द्वारा प्रमाणित किये गये हैं।

2. पशुधन किसानों की कृषि भूमि जोत आकार एवं फसल प्रतिरूप

तालिका क्रमांक 2 में पशुपालक कृषकों के भूमि जोत आकार एवं फसल प्रतिरूप के आंकड़ों से स्पष्ट होता है गांव के 92.30 प्रतिशत कृषकों के पास 6 एकड़ से कम की कृषि भूमि वर्षा आधारित है। वहीं 6.17 प्रतिशत कृषकों के पास 7 से 13 एकड़ भूमि वर्षा आधारित है। जबकि 1.53 प्रतिशत कृषकों के पास 14 एकड़ से ऊपर की कृषि भूमि वर्षा जल पर आधारित है।

तालिका 2: पशुधन किसानों की कृषि भूमि जोत आकार एवं फसल प्रतिरूप

क्र.सं.	कृषि भूमि जोत का आकार एवं फसल प्रतिरूप	पशुधन किसान	
		संख्या	प्रतिशत
	वर्षा आधारित कृषि जोत भूमि का आकार		
1.	लघु आकार (6 एकड़ तक)	60	92.30
	मध्यम आकार (7 से 13 एकड़ तक)	4	6.17
	बड़ा आकार (14 एकड़ से अधिक)	1	1.53
	सिंचित भूमि का आकार		
2.	लघु आकार (2.5 एकड़ तक)	63	96.94
	मध्यम आकार (3 से 5.5 एकड़ तक)	1	1.53
	बड़ा आकार (6 एकड़ से अधिक)	1	1.53
	फसल प्रतिरूप का स्वरूप		
3.	धान	45	69.23
	गेंहू	7	10.77
	चना	4	6.15
	उड़द	4	6.15
	ज्वार	4	6.15
	मक्का	3	3.8
	मसूर	3	3.8
	अरहर	3	3.8
	शब्जी	4	6.15

स्रोतः प्राथमिक आंकड़े (जनवरी 2022)

इसी तरह 96.94 प्रतिशत पशुपालक कृषकों के पास छोटे आकार के सिंचित भूमि है। वहीं 1.53 प्रतिशत कृषकों के पास मध्यम अर्थात 3 से 3.5 एकड़ की कृषि भूमि सिंचित है। जबकि 1.53 प्रतिशत कृषकों के पास 6 एकड़ से अधिक की कृषि भूमि सिंचित है। तालिका 2 में प्रदर्शित फसल प्रतिरूप के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश कृषकों के पास अर्थात 69.23 प्रतिशत कृषकों द्वारा धान की फसल उगाई जाती है। इसी तरह 10.77 प्रतिशत कृषकों द्वारा गेंहू की खेती की जाती है। वहीं चना, उड़द, ज्वार एवं सब्जियों आदि की खेती करने वाले कृषकों का प्रतिशत एक समान अर्थात 6.15 प्रतिशत है। जबकि मक्का, मसूर एवं अरहर की कृषि करने वाले पशुपालक कृषकों का प्रतिशत 3. 08 प्रतिशत है। इस क्षेत्र में धान मुख्य पारंम्परिक फसल है इसे मुख्य भोजन के रूप में उगाया जाता है। शायद इसीलिए इसे अधिकांश उत्तरदाता कृषकों द्वारा उगाया जाता है।

3. पशुधन किसानों द्वारा पषुपालन एवं आहार प्रतिरूप

चयनित गांव के पशुधन किसानों द्वारा पषुपालन एवं आहार प्रतिरूप के आंकड़ों को तालिका क्रमांक 3 में दर्ज किया है। गांव के पशुपालकों में सौ प्रतिशत लोग कुक्कुट पालन में लगे हैं। इसके बाद संकर प्रजाति के मवेशियों का प्रतिशत 38.46, बकरी पालन में 33.84 प्रतिशत, स्वदेशी नस्ल के मवेशियों का प्रतिशत 33.84 तथा 16.92 प्रतिशत कृषक भैस पालन करते हैं। चयनित गांव के 7.69 प्रतिशत लोग भेड़ पालते हैं। तालिका क्रमांक 3 द्वारा प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जो पशुपालक मुर्गी व बकरी पालते हैं। उनके लिए इनको पालने के लिए कम निवेश की आवश्यकता पड़ती है। इसे पालने व प्रबंधित करने में घर की महिलाएँ अपनी प्रमुख भूमिका निभाती हैं। बकरी पालने वाले अधिकांश लोगों का यह प्रमुख कारण माना जा सकता है। लेकिन जिनकी कृषि भूमि जोत का आकार मध्यम है उन्हें मवेशियों को पालने में श्रमिक उपलब्धता की कमी, पशु चिकित्सा सुविधाओं की कमी, कृषि उपज के लिए कम कीमत का मिलना, खराब कृषि विपणन सुविधाएँ, उच्च जोखिम क्षमता जैसे कारकों के कारण ऐसे कृषक कम संख्या में पशुओं को पालते हैं। उक्त कारक पशुधन द्वारा खेती में कृषकों की समस्याओं को कम करने के लिए उचित उपाय करने की आवश्यकता को इंगित करते हैं। शासन स्तर पर इससे मवेशियों की उत्पादकता को बनाये रखने के लिए कृषकों की बड़ी संख्या में पशुपालन हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।

मवेशियों के लिए आहार प्रतिरूप के आंकड़ों के ज्ञात होता है कि 92.30 प्रतिशत कृषकों के पास निम्न स्तर के हरे चारे की उपलब्धता है। वहीं 6.17 प्रतिशत कृषकों के पास उनके मवेशियों के लिए मध्यम स्तर के हरे चारे की उपलब्धता है। इसी तरह से 92.30 प्रतिशत कृषकों के यहाँ उनके मवेशियों के खाने के लिए निम्न स्तर के सूखे आहार की उपलब्धता है। वहीं 90.76 प्रतिशत कृषकों के यहाँ उनके मवेशियों के खाने के लिए निम्न स्तर के सांद्रित आहार उपलब्ध रहता है।

तालिका 3 द्वारा चयनित अध्ययन क्षेत्र के कृषकों के पास उनके मवेशियों के चराने की भूमि की उपलब्धता के आंकड़ों से ज्ञात हुआ है कि 66.15 प्रतिशत कृषकों के पास कम अवधि (3.5 घण्टे) तक के लिए पशु चारण की भूमि है। वहीं 20 प्रतिशत कृषकों के पास 4 से 6 घण्टे के लिए पशुओं के चराने की भूमि है। जबकि 13.85 प्रतिशत कृषकों के पास 8 घण्टे से अधिक की अवधि के लिए पशु चारण भूमि की उपलब्धता है। उक्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि पशुपालकों के पास मवेशियों के चारे की भूमि और आहार की न्यूनत्म उपलब्धता है। जिससे पशुओं की उत्पादकता का स्तर प्रभावित होता है।

तालिका 3: पशुधन किसानों के मवेशी एवं आहार प्रतिरूप

क्र.सं.	पशुपालन एवं आहार प्रतिरूप	पशुधन किसान की	
		संख्या	प्रतिशत
	पशुधन की स्थिति		
1.	देशी नस्ल के मवेशी	22	33.84
	संकर प्रजाति के मवेशी	25	38.46
	भैस	11	16.92
	भेड़	5	7.69
	बकरी	22	33.84
	कुक्कुट	65	100.00
	पषु आहार प्रतिरूप		
	1. हरी घास		
2.	निम्न (0 से 16.5 कि.ग्रा. तक)	60	92.30
	मध्यम (17 से 33.5 कि.ग्रा. तक)	4	6.17
	उच्च (34 कि.ग्रा. से अधिक)	1	1.53
	2. शुष्क आहार		
	निम्न (0 से 13.5 कि.ग्रा. तक)	60	92.30
	मध्यम (14 से 27.5 कि.ग्रा. तक)	2	3.09
	उच्च (28 कि.ग्रा. से अधिक)	3	4.61
	3. सान्द्रित पषु आहार		
	निम्न (0 से 5.5 कि.ग्रा. तक)	59	90.76
	मध्यम (6 से 11.5 कि.ग्रा. तक)	5	7.70
	उच्च (12 कि.ग्रा. से अधिक)	1	1.57
	4. पषु चारण भूमि एवं चारण समय		
	निम्न (0 से 3.5 घण्टे तक)	43	66.15
	मध्यम (4 से 7.5 घण्टे तक)	13	20.00
	उच्च (8 घण्टे से अधिक	9	13.85

स्रोतः प्राथमिक आंकड़े (जनवरी 2022)

4. पशुधन द्वारा प्राप्त दुग्ध, विक्रय एवं खपत का विवरण

तलिका क्रमांक 4 में पशुधन कृषकों द्वारा उनके मवेशियों से प्राप्त दूध की मात्रा से ज्ञात होता है कि 93.84 प्रतिशत कृषकों के यहाँ 3 लीटर तक दूध प्राप्त होता है। वहीं 4.63 प्रतिशत कृषकों के यहाँ 4 से 8 लीटर तक दूध उपलब्धत होता है। जबकि 1.53 प्रतिशत कृषकों के यहाँ अधिकतम 16 लीटर दूध उनके मवेशियों से प्राप्त होता है। प्राप्त दूध के खपत होने संबंधित आंकड़ों से ज्ञात हुआ है कि 90.86 प्रतिशत कृषकों द्वारा 1.5 लीटर दूध स्वयं के लिए उपयोग करने हेतु बचाते हैं। वहीं 7.69 प्रतिशत कृषक कुल उत्पादित दूध का 3 लीटर स्वयं खपत करते हैं। जबकि 1. 53 प्रतिशत कृषक 7 लीटर दूध का उपयोग अपने लिए करते हैं। इसी तरह उत्पादित दूध के विक्री संबंधित आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि 92.31 प्रतिशत कृषक 2 लीटर दूध का विक्रय करते हैं। वहीं 4.62 प्रतिशत लोग 4 लीटर दूध विक्रय करते हैं। जबकि 3. 07 प्रतिशत कृषक 8 लीटर से अधिक दूध का विक्रय करते हैं। मूलतः इस तरह के शोध परिणाम सत्यनारायण, जगदीश्वरी एवं यतिराज (2010) के द्वारा किये शोध निष्कर्षो द्वारा संदर्भित होते हैं।

तालिका 4: पशुधन द्वारा दुग्ध उत्पादन, खपत एवं विक्रय एवं खपत

क्र. सं.	दुग्ध उत्पादन, खपत एवं विक्रय एवं खपत	पशुधन किसान	
		संख्या	प्रतिशत
1.	**दुग्ध उत्पादन**		
	निम्न (0 से 3 लीटर तक)	61	93.84
	मध्यम (4 से 8 लीटर तक)	3	4.63
	उच्च (16 लीटर से अधिक)	1	1.53
2.	**दुग्ध की खपत**		
	निम्न (0 से 5 लीटर)	59	90.86
	मध्यम (5 से 7 लीटर तक)	5	7.69
	उच्च (8 लीटर से अधिक)	1	1.53
3.	दुग्ध विक्रय		
	निम्न (0 से 5 लीटर तक)	60	92.31
	मध्यम (5 से 10 लीटर तक)	3	4.62
	उच्च (10 लीटर से अधिक)	2	3.07

स्रोतः प्राथमिक आंकड़े (जनवरी 2022)

5. पशुधन किसानों द्वारा पषुपालन में आने वाले बाधाएँ

सीधी जिले में पशुधन पालक किसानों द्वारा पशुपालन में कई प्रकार की बाधाएँ आने की बात को स्पष्ट किये हैं। आंकड़े तालिका क्रमांक 5 में दर्ज किये गये हैं। इनमें से अधिकांश (18. 46 प्रतिशत) किसानों ने पशुपालन के लिए हरे चारे की समस्या को प्रमुखता से बताया है। इसके बाद 16.92 प्रतिशत कृषकों ने पशुपालन में स्थान की कमी होना मानते हैं। इसी तरह 7.69 प्रतिशत कृषकों ने पशुपालन व उत्पाद विक्रय हेतु बिचौलिये द्वारा शोषण होने की बात कही है। वहीं 6.15 प्रतिशत कृषकों ने पशुपालन हेतु स्वास्थ्य सेवा की उपलब्धता की कमी को स्पष्ट किये हैं। 4.62 प्रतिशत कृषकों ने वित्तीय समस्या के होने से पशुपालन न करने की बात को बताया है। 3.08 प्रतिशत कृषकों ने कहा है कि उनके मवेशियों को जंगली जानवर द्वारा शिकार कर लिया जाता है जो उनके लिए एक बड़ी समस्या है। जबकि 3.08 प्रतिशत पशुपालक कृषकों ने श्रम की समस्या का होना मानते हैं। मूलतः उक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि कृषि के लिए भूमि की उपलब्धता में कमी एवं चयनित अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत भौगोलिक स्थिति भी पशुधन पालन की एक प्रमुख बाधा है।

तालिका 5: पशुपालन में आने वाले बाधाएँ

क्र. सं.	पशुपालन में आने वाले बाधाएँ	पशुधन किसान की संख्या	
		संख्या	प्रतिशत
1.	पशु स्वास्थ्य समस्याएँ	4	6.15
2.	वित्त की समस्या	3	4.62
3.	पशु आहार की समस्या	12	18.46
4.	जंगली जानवारों द्वारा शिकार की समस्या	2	3.08
5.	स्थान की कमी की समस्या	11	16.92
6.	श्रम की समस्या	2	3.08
7.	बिचौलिये की समस्या	5	7.69

स्रोतः प्राथमिक आंकड़े (जनवरी 2022)

6. पशुधन किसानों द्वारा रूचिकर पशुधन गतिविधियों का विस्तार

अध्ययन क्षेत्र में पशुधन पालकों के लिए पशुधन गतिविधियों के विस्तार करने से संबंधित आंकड़ों को तालिका क्रमांक 6 में दर्शाया गया है। इन आंकड़ों से ज्ञात होता है कि 44.62 प्रतिशत पशुपालक कृषक बकरी पालन में विस्तार करने की रूचि रखते हैं। वहीं 36.92 प्रतिशत किसानों ने दुग्ध डेयरी के लिए विस्तार करने की रूचि दिखाई है। इसी तरह 24.62 प्रतिशत पशुपालकों ने कुक्कुट पालन इकाई के प्रति विस्तार करने में अपनी रूचि बताई है। वहीं 3.08 प्रतिशत लोगों ने मछली पालन के लिए तथा 12.03 प्रतिशत लोगों ने भेड़ पालन करने के लिए रूचि रखते हैं। संभवतः पशुधन पालक कृषकों को बकरी एवं कुक्कुट पालन में कम समय और कम लागत आती है। इसी लिए इनके पालन में अधिक रूचि दिखाई है। वहीं दुग्ध डेयरी तथा मत्स्य पालन को कृषक अधिक लाभकारी होने का कारण मानते हैं।

तालिका 6: पशुधन पालन की गतिविधियों का विस्तार

क्र.सं.	पशुधन पालन की गतिविधियों का विस्तार	पशुधन किसान	
		संख्या	प्रतिशत
1.	डेयरी व्यवसाय	24	36.92
2.	कुक्कुट पालन	16	24.62
3.	बकरी पालन	29	44.62
4.	मत्स्य पालन	02	03.08
5.	भेड़ पालन	08	12.3

स्रोतः प्राथमिक आंकड़े (जनवरी 2022)

निष्कर्ष एवं सुझाव

पशुपालन से खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में सुधार की अपार सम्भावनाएँ है। आहार में गुणवत्तापूर्ण प्रोटीन की मात्रा बढ़ाना अच्छे पोषण का एक अनिवार्य घटक है। पशु प्रोटीन युक्त पोषक तत्व बच्चों के भोजन के लिए अधिक उपयोगी होता है। पशुधन क्षेत्र में अधिक उपज सुनिश्चित करना मूलतः सतत् विकास प्रयासों पर निर्भर करता है। सतत् विकास की प्रक्रिया को बनाये रखने के लिए किसानों को प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण, संसाधन, पशु चिकित्सा सेवाओं इत्यादि सभी के लिए आसान पहुँच सुनिश्चित की जानी चाहिए। बेहतर नीति निर्धारण एवं निर्णयों के द्वारा पशुधन पालन कृषकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार होना एक महत्वपूर्ण विशेषता है। सीधी जिले के करमाई नामक गांव के ग्रामीणों के लिए पशुधन आधारित कृषि प्रणाली आय का प्रमुख स्रोत है। यह परिवार की आहार संबंधी जरूरतों की पूर्ति का एक अच्छा स्रोत भी प्रदान करता है। पशुपालन में सम्मिलित अधिकांश किसान निम्न आय वर्ग के है। अधिकांश किसानों के

पास उनके मवेशियों के लिए चारे व आहर की कमी है। क्षेत्र में पशुपालन करने वाले कृषकों के पास मवेशी पालन करने के लिए स्थान की उपलब्धता नहीं है। घरेलू एवं कृषि गतिविधियों में भागीदारी और निर्णय लेने के प्रति महिलाओं की भूमिका बढ़ाने की आवश्यकता है। कम कृषि लाभप्रदाता के कारण युवा लोग कृषि में बहुत कम रूचि रखते हैं। जिसके कारण पशुधन पालन का स्तर धीरे–धीरे निम्न हो रहा है। विभिन्न सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है। शासन द्वारा किसानों के लिए कृषि ऋण के विस्तार को सरल बनाये जाने की आवश्यकता है। जिससे कृषक अधिक से अधिक ऋण लेने के प्रति उत्साहित होगे। पशु चिकित्सा विस्तार सेवाओं तक पहुँच बनाये रखने से लोगों में पशुपालन की रूचि बढ़ेगी। जिसके परिणामस्वरूप कृषि और पशुधन लाभप्रदाता का स्तर बढ़ेगा तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च होगा।

अभिस्वीकृति

प्रस्तुत शोध आलेख को पूर्ण करने में सीधी जिले के करमाई गांव के पशुधन पालक कृषकों का आभारी हूँ। जिन्होंने शोध अध्ययन से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी देने में किसी भी तरह की कोई समस्या नहीं आने दी। साथ ही इस शोध कार्य में आवश्यक जानकारी उपलब्ध करने हेतु मैं पशुधन विभाग सीधी के अधिकारियों व कर्मचारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

संदर्भ

1. बिरदार, एन., देसाई, एम., मंजूनाथ, एल. एवं डोड्डमनी, एम. टी. पश्चिमी महाराष्ट्र के किसानों की आजीविका के लिए पशुधन के योगदान का आकलन, जर्नल ऑफ ह्यूमन इकोलॉजी, 2013, 41 (2) : 107–112
2. बुनियादी पशुपालन सांख्यकी (2006), भारत सरकार, कृषि मंत्रालय, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य पालन विभाग, नई दिल्ली
3. चांद, आर. एवं राजू, एस. एस. पशुधन क्षेत्र की संरचना और इसके विकास को प्रभावित करने वाले कारक, इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स, 2008, 63 (2) : 198–210
4. इकबाल, एम. ए. उत्तर भारत में ग्रामीण परिवर्तन पर पशुधन पालन की भूमिका : एक विशेष अध्ययन, जर्नल ऑफ ज्योग्राफी 2010, 5 (2), 83–94
5. जनगणना रिपोर्ट, सीधी जिला 2011, भारत सरकार
6. जगदीश्वरी, वी. (2009), आदिवासी किसानों की नृवंशविज्ञान संबंधी प्रथाएं– एक अन्वेशणात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंधन, आचार्य एन.जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद
7. खान, एन., रहमान, ए. एवं सलमान, एम. एस. उत्तर भारत में सामाजिक–आर्थिक विकास पर पशुधन पालन का प्रभाव, फोरम जियोग्राफिक, 2013, 12 (1) : 75–80
8. कविता, एल. एवं रेड्डी, एम. एस. कृषक महिलाओं की व्यक्तिगत और सामाजिक–आर्थिक विशेषताएं, जर्नल ऑफ रिसर्च, अंगराउ 2007, 35 (1) : 79–83
9. मिश्रा, एस., शर्मा, एस., वासुदेवन, पी., भट्ट, आर. के., पाण्डे, एस., सिंह, एम., मीणा, बी. एस. एवं पाण्डे, एस. एन. मध्य भारत के बुंदेलखंड क्षेत्र में पशुधन प्रबंधन प्रथाओं में लिंग भागीदारी एवं महिलाओं की भूमिका, इण्टरनेशन जर्नल ऑफ रूरल स्टडीज, 2008, 15 (1) : 1–5
10. माफ़ीमिसेबी, टी. ई., ओनेका, यू. पी., आयिन्दे, आई. ए. एवं अशाओलू, ओ. एफ. दक्षिण नाइजीरिया में किसानों द्वारा आधुनिक पशुधन प्रबंधन प्रौद्योगिकियों को अपनाने के विशिष्ट सामाजिक–आर्थिक निर्धारकों का विश्लेषण, खाद्य, कृषि और पर्यावरण जर्नल, 2006, 4 (1) : 183–186
11. नागभूषणम, के. एवं नंजइयां, के. संस्थागत प्रशिक्षण द्वारा प्रशिक्षित कृषि महिलाओं की राय, जर्नल ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, 1998, 9 (3) : 2120–2123
12. पशुपालन एवं डेयरी पर कार्य समूह की रिपोर्ट, 11वीं पंचवर्षीय योजना (2018–19), भारत सरकार, योजना आयोग, नई दिल्ली
13. पशुधन जनगणना रिपोर्ट, 2019, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार
14. रविकुमार, एस. (2007), आंध्र प्रदेश राज्य के पशुपालन विभाग द्वारा पशुधन सेवा वितरण– एक महत्वपूर्ण विश्लेषण, अप्रकाशित शोध प्रबंध, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, उत्तर प्रदेश
15. सत्यनारायण, के., जगदीश्वरी, वी., चंद्रशेखर मूर्ति, वी., विल्फ्रेड रूबन, एस. एवं सुधा, जी. नरसापुरा गांव के पशुधन किसानों की सामाजिक आर्थिक स्थिति–एक बेंचमार्क विश्लेषण, पशु चिकित्सा विश्व, 2010, 3 (5) : 215 –218
16. सत्यनारायण, के., जगदीश्वरी, वी., मूर्ति, वी. सी., रुबन, एस. डब्ल्यू. एवं सुधा, जी. नरसापुरा गांव के पशुधन किसानों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति– एक बेंचमार्क विश्लेषण, महिला, 2010, 10 : 15–39
17. सत्यनारायण, के., जगदीश्वरी, वी., यतिराज, एस. पशुधन गतिविधियों पर एक बेंचमार्क विश्लेषण, मैसूर जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज, 2010, 44 (3) : 664–667
18. शर्मा, के., सिंह, एस. पी. एवं यादव, वी. पी. एस. उन्नतशील भैंस पालन प्रबंधन प्रथाओं के बारे में डेयरी किसानों का ज्ञान, इंडियन रिसर्च जर्नल ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, 2009, 9 (3) : 51–54
19. सुरेश, ए., गुप्ता, डी. सी., मान, जे. एस. एवं सिंह, वी. के. राजस्थान में पशुधन की संरचना और स्वामित्व पर सामाजिक–अर्थव्यवस्था एवं कृषि–पारिस्थितिक कारकों का प्रभाव, इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स, 2008, 63 (2) : 244–264
20. वार्षिक रिपोर्ट 2014–15, पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन विभाग, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार